REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

''खोरठा साहित्यकार श्याम सुंदर महतो की लेखनी के विविध आयाम''

अमित कुमार
(वरीय शोधार्थी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड.

सारांश

रत्नगर्भा भारत भूमि में अनेक रत्न प्राप्त हुए है, उन्हीं रत्नों में एक रत्न का नाम श्री श्याम सुन्दर महतो है। जिनके प्रकाश से प्रकाशमान खोरठा भाषा क्षेत्र ही नहीं, बल्कि पूरे झारखण्ड एवं इससे सटे पड़ोसी राज्य हुआ है। इन्होंने खोरठा भाषा साहित्य का विकास कर पूर्वजों से प्राप्त विरासतीय अक्षुण्ण भाषा की गरिमा को शिखर तक पहुंचाया है।

झारखण्ड प्रदेश के धनबाद जिले के गोमो स्टेशन से सटे सुरम्य वन प्रान्तर में पहाड़ की गोद में बसा हुआ एक छोटा सा गाँव है– खेशमी। जो अपनी प्राकृतिक सुषमा से हर व्यक्ति का मन मोह लेता है। 3 सितम्बर, 1939 को मानिन पिता स्व० श्री केदारनाथ महतो, मानिन माता गंगामणि देवी की पाँचवी संतान के रूप में श्याम सुंदर महतो का जन्म हुआ।

''आब धनबाद चुप नाय रहत
आब धनबाद बोलत
ढइर दिन चुप रहल
आब तो नजइर खुलल।''

विशिष्ट शब्द :– रत्नगर्भा, रत्न, अक्षुण्ण, प्रकाशमान।

शोध प्रविधि :

यह शोध पत्र प्राथमिक स्रोतो से प्राप्त सूचनाओं को एकत्रित करने के बाद तैयार किया गया है। सूचना एकत्रित करने हेतु खोरठा भाषा के प्रमुख साहित्यकारों से मुलाकात करके इनके तथ्यों का संग्रहण हुआ है। साथ ही शोध पत्र श्याम सुन्दर महतो पर आधारित है जिसके कारण उनके गाँव के पाहान, बुजुर्ग महिला एवं पुरूषों को प्राथमिकता दी गई है। प्राथमिक आंकड़ा संग्रहण हेतु अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, फोटोग्राफी आदि शोध प्रविधियों का प्रयोग हुआ है। द्वितीय स्रोत के रूप में खोरठा लोक साहित्य से संबंधित पुस्तकों को चयन करके शोध में सम्मिलित की गई है।

श्यामसुंदर महतो :

बहुआयामी व्यक्ति के धनी श्याम सुंदर महतो का रचनात्मक उद्देश्य अपने समकालीन समाज के रूढ़ीवादी, अतीतजीवी मनुष्य को बदलकर एक वैज्ञानिक, मानवकारी, शोषण मुक्त मनुष्य के निर्माण की साहित्यिक पृष्ठभूमि तैयार करती है। इनके व्यक्तित्व का बड़प्पन है कि ये अपने समकालीन तथा नए रचनाकारों को पूरा सम्मान देते हैं और उन्हें गंभीरता से पढ़ते तथा चर्चा करते हैं। उन्होंने चर्चाओं में दूसरे के लेखन का उद्धरण अवश्य दिया, पर उन्हें अपनी रचनाओं पर बात करते नहीं सुना। श्याम सुंदर महतो हिन्दी, खोरठा साहित्य के ऐसे कछावर स्तंभ और रचनाकार हैं, जो अपने समय और साहित्य का सही अर्थों में प्रतिनिधित्व

करते हैं, दुनिया की तरक्की तो कई लोग करते हैं, लेकिन इस तरक्की की घुड़दौड़ में मानव और मानवता कहाँ से कहाँ पहुंच गयी। इस पर तो एक संवेदनशील, व्यक्ति, कवि, लेखक, साहित्यकार ही सोचता है। इस दृष्टि से महतो काफी संवेदनशील रहे हैं। इनकी चिन्ता का केन्द्र व्यक्ति, सामाजिक, सामूहिक तीनों ही रूपों में है।

श्याम सुंदर महतो कालेखन एक बैचेन आदमी का रचनात्मक सफर है। ऐसा आदमी, जो दुनिया के हर रंग को देखता है, परखता है, लहरों के बीच डोलता उतरता है और हर लहर से, लहर के हरेक कतरे से रिश्ता जोड़ता है, और फिर आगे बढ़ता है। महतो जिन्दगी के सफर में अपने समय की हर सुबह–सांझ को हर क्षण जीते हैं, उजाले को अपने भीतर समेटते हैं, और अंधेरों में लिपटते हुए उन्हें भी अपना हम सफर बना लेते हैं। ये अंधेरे–उजाले के भीतर अंतरम में भी गूँथे लगते हैं। दोनों भीतर चलने वाली एक और यात्रा के समान हैं। उनकी बाहर की दुनिया बहुत बड़ी है और इसीलिए वे अपने समय के अपने जीवन की हर सामाजिक बात पर अपनी बात कहते हैं– जमाने को, जमाने वालों को संबोधित करते हैं, और इसीलिए अपने समय के एक प्रवर्तक रचनाकार बन जाते हैं। मैं उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालना चाहूँगा।

''मुक्तिक डहर''

श्यामसुंदर महतो 'श्याम' का लघु काव्य 'मुक्तिक डहर' एक सशक्त काव्य रचना है। इस काव्य में शक्तिनाथ महतो की गाथा गायी गयी है। शक्तिनाथ महतो झारखण्ड के एक लोकप्रिय तथा शक्तिशाली सपूत थे। वे उलगुलान के मार्ग पर चलते–चलते शहीद हो गये। हमारे उस शहीद ने खोरठांचल के सभी लोगों को मुक्ति का नया डहर दिखाया और इसी क्रम में उन्होंने अपनी जिंदगी को मातृभूमि के चरणों में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी माँ, माटी, मातृभाषा और मानव की भलाई के लिए उलगुलान का नेतृत्व किया और शहीद हो गये।

इस काव्य में शहीद शक्तिनाथ महतो के उलगुलान–क्रम में अपने प्राणार्पण की कहानी है। कवि ने अपने इस काव्य की रचना के माध्यम से शहीद शक्तिनाथ का मान बढ़ाया है और झारखण्ड के समाज को मुक्ति का रास्ता दिखाया है। इस कार्य में कवि को प्रचुर सफलता प्राप्त हुई है। 'मुक्तिक डहर' पुस्तक के प्रकाशक मंडल की ओर से उद्‌गार व्यक्त किया गया– 'शक्ति कोयला छेतरेक एगो सुरूज हल, जकर आयल से झारखंडेक मानुस विरोधे लड़े खातिर प्रेरणा पइला। पहिल बेर एगो सालोआनियाँ संघर्ष शुरू भेलई आर हियांक लोकेक हुंकारे सुदखोर–गुंडा सभेक हिमइत हाइर गेलई। अइसन बुझाइ लागलय जे सउसनेक विरोधे सुरू भेल ई आंदोलन झारखण्ड राइज पाइल आंधी विरइतई। मकिन तखने ई धरतिक लुटवइया सोब एकजुट भइकें उलगुलानेक लेताइर के तोरेक सरपंच आर 1977 के 28 नवम्बरे शक्तिनाथ महतो सिजुआक धरती सहीद भेला। तवो संघरसेक आंधी रूकल नाँइ। सहीदेक लाल लहु से लहुलुहान माटिक किरिया खाइके हियांक नर–नारी एगो अनबिसरवा हुलुस्थलेक डरहें डहइर गेला।

इस लघु काव्य जो कथावस्तु और कथावस्तु के खंड के आधार पर प्रबंध काव्य सदृश है, कि कथावस्तु को आठ भागों में विभक्त किया गया है– 1. माटी, 2. मान, 3. जनम, 4. अरजन, 5. सुगबुगइी, 6. हुलुस्थुल, 7. घिन–घात और 8. मुक्तिक डहर।

'माटी' खंड में कवि ने इस पुस्तक की पृष्ठभूमि और भूमिका प्रस्तुत की है। मानउता, ईमानदारी, परेम–भाव आर संस्कीरति आनन्द भोरल–पुरल हलई। मेंतुक, जइसे–जइसे हियां परदेसिक गोड जमल, तइसे–तइसे ई धरती अनियांइ, अतियाचार, घुसखोरी, सुदखोरी, छल–परपंच, फरफंदी, गुंडागर्दी, लूट–पाट, मारपीट, हतिया आर आंतक के अखरा बइन गेलई। सेंसे एगो मानववादी सहभताक संकेत हई। **'मान'** खंड में शहीद शक्तिनाथ की जीवन–गाथा का प्रारंभ हुआ है। शक्ति के माता–पिता, भाई, सास–ससुर और मुक्ति के डहर के डागर–चाकर आदि को सम्मान दिया गया।

'जनम' खंड में परिवेश की प्राकृतिक सुषमा के चित्रण के साथ शहीद शक्तिनाथ महतो के जन्म की कहानी तथा सात महीने की झलक का चित्रण है। **'अरजन'** खंड में शिक्षा प्राप्ति के साथ–साथ कृषि–कार्य, ग्रामीण जीवन की गरीबी के ज्ञान की चर्चा है। यहीं से शोषण और अतियाचार, घुसखोरी, सुदखोरी, महाजन–माफिया के काले धंधे को देखकर सामाजिक जीवन की कष्ट भरी वास्तविकता के ज्ञान का अर्जन हुआ तथा संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार हुई मन–मस्तिष्क में।

'सुगबुगी' खंड में शोषण और अन्याय के घिनौने चेहरे, जोर–जुल्म करने वाले घुसखोर, सुदखोर, महाजन माफिया की काली करतूतों को आमजन के बीच प्रचारित और प्रसारित किये जाने का वर्णन है। इसी खंड में गुंडागर्दी और दादागिरी के खिलाफ गरीब–गुरबा को जगाने, उलगुलान की भूमिका तैयार करने और उनकी मुक्ति के लिए डहर की खोज करने का वर्णन है।

'हुलस्थुल' खंड में बाबू बिनोद बिहारी महतो एवं श्री एके राय के साथ होकर, उलगुलान को तीव्र किये जाने का वर्णन है। शिवाजी समाज और झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के गठन और इनके माध्यम से इंकलाब लाने का वर्णन किया गया है। सारे प्रकार के उपर्युक्त भ्रष्टाचारियों पर लगाम और तत्संबंधी मीटिंग एवं जुलूस के आयोजन किये जाने का वर्णन भी इसी खंड में है। गांव से शहर तक समग्र कोयलांचल में शक्ति के जय जयकार की गूंज के फैलने का वर्णन भी इस खंड में है।

'घिन–पात' खंड में शक्ति की हत्या की साजिश और हत्या का विस्तृत विवरण है। उनकी शहादत मार्मिक चित्र इसमें प्रस्तुत है। इनकी मौत पर झारखण्ड की धरती फफक उठी। 'मुक्तिक डहर' नामक अंतिम खंड में शहीद शक्ति के बलिदानोपरांत शोषण और अत्याचार से झारखण्ड की धरती को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो गया। शक्ति और शक्ति का युग जीतवा बलिदान वह आलोक हैं जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में 'मुक्तिक डहर' बनाने की प्रेरणा देता है।

शहीद शक्तिनाथ महतो के जीवन पर आधारित 24 पृष्ठों की खोरठा काव्य है इसमें शोषण के विरूद्ध संघर्ष का आह्वान है। धनबाद क्षेत्र में व्याप्त कोल–माफियागिरी, अपराध, शोषण व सुदखोरी के विरूद्ध शक्तिनाथ महतो की जीवनगाथा का बेहतरीन वर्णन है।

तोजं आर हाय :

इसमें शोषण के विरूद्ध 44 ओजपूर्ण कविताएँ है, साथ ही साथ कई खोरठा पहेलियाँ और 140 खोरठा नारें हैं– मुख्यतः पुस्तक में दिकुओं द्वारा मूलवासियों के शोषण की कहानी है। दुनिया के अंदर ऐसी धरती है ही नहीं जहाँ 80 प्रकार के खनिजों का उपयोग हो रहा हो, झारखण्ड धरती का वो टुकड़ा है, जहाँ जल, जंगल, जमीन की गुणवत्ता की बात होती है। इसकी धरती की कोख और गोद दोनों संपन्न व बेजोड़ है। हमारे खनिजों का दोहन– जो कोयला निकाल लिया गया, बाकी सब खनिजों के अंत में जो दुर्गती होगी, वह अत्यंत ही भयावह हो सकती है इसके माध्यम से दूरगामी शोषण की बात कही गई है। हमारे ऊपर का शोषण का प्रकार दुनिया के अन्य शोषण से भिन्न है। जो एक काले भविष्य को आमंत्रित करता है। हाम– इस जमीन पर रहनेवाला आदिवासी, मूलवासी है, जिसका भविष्य इन अत्याचारों की ज्यादती से जुड़ा है। इस नाते केवल आर्थिक शोषण ही नहीं बल्कि उसके चलते हमारा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शोषण हो रहा है। हमारे गीत खत्म हो रहा है, नये–नये पर्व आ रहे हैं।

अपनी संस्कृति खत्म होती जा रही है। हमारी भाषा–संस्कृति आधुनिकता में दब जाती है। बाहरी दिखावेपन में हम छिप जाते हैं। हमारे ऊपर चौतरफा शोषण है, कोई बुद्धि, कोई बल, कोई छल के सहारे हम पर शोषण कर रहा। इसी का लेखा जोखा–तोजं आर हाम में है।

खोरठा लोकगीत :

पारम्परिक तर्ज पर नए गीत सृजित किये गये है।

आदिवासी वनवासी क्यों :

आर्यकुल के कार गुजारियों का भंडा–फोड़ है।

टहलू दादाक हांक :

टहलू दादाक हांक सिर्फ गप–शप नहीं है, हांक के माध्यम से समाज के सच को कहा गया है। वैसा सच जिससे समाज का हर घर, हर परिवार, हर वर्ग सफर तो करता है, पर उस सच का सामना के लिए आगे नहीं बढ़ता।

उदाहरण– I. पेंदल झगरा– के द्वारा लेखक कहना चाहते है समाज में किस तरह झूठ को बतंगड, तिल का ताड बना दिया जाता है।

दो दोस्त थे। जो गप–गप में ही लड गये और दुश्मन बन गये, फिर जब उन्हें एहसास हुए तो फिर से दोस्त बन गये। सत्य की जीत हुई।

II. परथा परब :

परथा परब में यह दिखाने की कोशिश की गई है, आज जो समाज में पर्व के दिनों में झगड़ा फैलाया जाता है– इसको बतलाया गया है। पुलिस प्रशासन को एलर्ट कर दिया जाता है। ऐसा कई पर्वों में होता है– करम, सरहुल, बंऊडी, सोहराय, टुसू, होली, सरस्वती पूजा, दिवाली.....।

पर्व का मतलब आनन्द, हर्ष, खुशी होता है, न कि किसी के साथ मार–पीट, हिंसा का गुंजाइस। पूरे देश में कहीं ऐसा जगह नहीं है, जहाँ पर्व–त्यौहारों में हिंसा नहीं होती।

चेडरॉक मुडे बेल :

इस पुस्तक में पोंगापंथी और अंधविश्वास के खिलाफ जोरदार आवाज है, यह खोरठा काव्य पाखण्ड के खिलाफ है। चेडराक मुंडे बेल पोगापंथी की कहानी है। सांस्कृतिवाद के खिलाफ एक आदमी को ठग कर कैसे बिना परिश्रम के ढगा जाता है। पद, पैसा की प्राप्ति की जाती है। प्रथा– इन लोगों ने लाई। मनुष्य नौकर भी हो सकता है, ये इनकी देन है, समाज में छोटा–बड़ा, ऊँच–नीच की संरचना इनकी बनाई हुई है।

सेवा / कार्यक्षेत्र :

यात्रा जन–जागरण की पूरे खोरठांचल में इन्होंने चलाया है। खोरठा भाषा–संस्कृति की घूम गली–गली में, गांव–गांव में, हर स्कूल, हर कॉलेज और सिनेमा हाल में, खोरठा गीत–सम्मेलन में, कवि सम्मेलन में, डहर–यात्राओं, साईकिल यात्राओं में, संगठनात्मक सम्मेलनों, कार्य–शालाओं, महाधिवेशनों, अखिल भारतीय खोरठा–सम्मेलनों जैसे सैकड़ों नहीं, बल्कि हजारों की संख्या में किये है और कर रहे हैं।

सितम्बर 1998 में विराट लोकभाषा सम्मेलन (दो दिवसीय), खोरठा साहित्य–संस्कृति का पांच दिवसीय महाधिर्दशन, दर्जनों दो दिवसीय, तीन दिवसीय सेमीनार, प्रत्येक वर्ष सौ से अधिक खोरठा गीत, करि सम्मेलन और डहर यात्राओं का सफल आयोजन किया है। एक–एक जगह में पांच से अधिक बार भी सम्मेलन आयोजित हुए हैं, जिसमें रांची, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, कोडरमा, हजारीबाग, ओरमांझी, कतरास, कसमार, कोठार, खेंराचातर, खेतको, गोमिया, नावाडीह, थास, जैनामोड, झारखण्ड कॉलेज डुमरी, तोपचांची के नाम लिए जा सकते हैं।

यदि साहित्यिक क्षेत्र को ले तो कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, लघु नाटक, प्रकीर्ण साहित्य, पहेलियाँ, पत्राचार जैसी विधाओं के अतिरिक्त कुछ विशेष क्षेत्र भी है।

खोरठा के अतिरिक्त हिन्दी में भी उपरोक्त विधाओं में सुरक्षा, सुझाव, गुणवता, उत्पादकता, गुणवता नियंत्रण, पर्यावरण, लागत परिवार नियोजन को भी एकता, राजभाषा पर विशेष सामग्रियों का लेखन किया है।

उपरोक्त विषयों के प्रभावपूर्ण प्रदर्शन से सैकड़ों पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र, सराहना, नकद इमाम भी अर्जित किया है।

पुरस्कार, सम्मान, सराहना :

कला, कलाकार और साहित्यकार की न कोई जात होती है और न सम्प्रदाय, वह अपनी लेखनी, अपनी रचना में संवेदना के रंग भरता है। साहित्यकार सम्मान, व्यक्ति, घटनाओं की ऐसी तस्वीर उभारता है, जो उसकी संवेदना की चाहत हो। यह तस्वीर सत्य की अभिव्यक्ति के साथ, लोक कल्याण, सौंदर्य, प्रकृति चित्रण का प्रतिपादन करती है।

श्याम सुंदर महतो की रचनाएँ, ज्ञान, भावना, संकल्प, जागरूकता, चेतना से जुड़ी है, फिर तो समाज उसे पहचानेगा भी, और अपनायेगा भी। यही मान्यता सामाजिक स्वीकृति है, पहचान है और इसी पहचान का प्रतीक है, पुरस्कार, पुरस्कार सिद्ध करता है कि रचनाकार की रचनायें, कलाएँ, समाज को स्वीकार्य ही नहीं

बल्कि समाज के लिए अत्यधिक उपयोगी भी है। श्याम सुंदर महतो की रचनाएँ, काव्य, साहित्य सत्य पर आधारित है, उसमें परोपकार, जनसेवाभाव, चेतना, जागृति की भावना से ओत–प्रोत है।

एक साहित्यकार के रूप में श्याम सुंदर महतो ने समुचित खोरठा–भाषा समुदाय को एक रूप देने की चेष्टा की है इसके अलावा इन्होंने समाज की कुरीतियों और व्यवसनों में सुधार का भी प्रयत्न किया है।

पुरस्कार, सम्मान व सराहना :

पुरस्कार :–

श्याम सुंदर महतो की लेखनी की जादूगरी, शब्दों, रचनाओं की सुझ–बूझ ने उनको अनेकों पुरस्कार से सम्मानित करवाया जिनका विवरण इस प्रकार है–

1ण भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा 1992–93 में आयोजित राष्ट्रव्यापी वन एवं पर्यावरण देख–भाल प्रतियोगिता में राष्ट्रीय पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र।

2ण देश व्यापी अंतर इस्पात सुरक्षा लेख–प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार एवं प्रशिस्त पत्र दो दिवसीय पुरस्कार वितरण समारोह भिलाई में आयोजित हुई और सेल चेयर पर्सन श्री एस.आर. जैन के हाथों पुरस्कार वितरण हुआ।

3ण क्वालिटी सर्किल फोरम ऑफ इंडिया, बोकारो द्वारा आयोजित क्वालिटी सर्किल कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र।

4ण बोकारो स्टील प्लांट द्वारा आयोजित सुझाव स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

5ण स्टील आथिरीटी ऑफ इंडिया लिमिटेड बोकारो स्टील द्वारा कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

6ण 5 जून, 1991 विश्व पर्यावरण दिवस पर बोकारो स्टील द्वारा आयोजित नारा प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

7ण स्टील आथिरीटी ऑफ इंडिया बोकारो प्लांट द्वारा क्वालिटी सर्किल में लेख प्रतियोगिता में वर्ष 1993 में द्वितीय पुरस्कार।

8ण अच्छे सुझाव पर, बेहतर सुझाव पर, बीसों बार सम्मानित।

सम्मान :

पुरस्कार की भाँति श्याम सुंदर महतो को अनेको बार सम्मानित किया गया है, चाहे वह सामाजिक सम्मान हो या भाषायी सम्मान।

1ण बोकारो इस्पात प्रबंधन द्वारा भाषायी कृतियों से प्रभावित होकर राजभाषा पुरस्कार, व प्रशस्ति से 3–2–94 को सम्मानित किया गया।

2ण खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद् द्वारा सन् 1994 के खोरठा साहित्य में श्री निवास पानुरी सम्मान से सम्मानित किये गये।

3ण खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़ द्वारा जाऊ जिनगी खोरठा सेवा सम्मान से 23 अक्टूबर, 2010 को नवाजा गया।

4ण 24 अप्रैल, 2010 को झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखडा, राँची द्वारा भाषा सम्मान।

5ण अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद्, कार्यालय, मेण्डरा द्वारा – सपूत सम्मान।

6ण बिनोद बिहारी महतो जयंती समिति द्वारा खोरठा की कविताओं से प्रभावित होकर सम्मान।

7ण वर्ष 2005 व वर्ष 2006 में श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति गोमियाँ द्वारा खोरठा कविताओं से प्रभावित होकर प्रतिभा सम्मान।

8ण लायन्स क्लब दूसरी–डूमरी द्वारा स्वतंत्रता दिवस की 66वीं वर्ष गाँठ पर खोरठा कविताओं से प्रभावित होकर सम्मान।

9ण खोरठा साहित्य संस्कृति मंच, खेशमी, द्वारा साहित्यिक सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र।

सराहना :–

1ण श्री मोरारजी देसाई, प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा शुभ कामना, वर्ष जनवरी, 1978 में।

2ण श्री राजीव गांधी, प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा सराहना, 7 फरवरी, 1986.

3ण श्री कमलनाथ, वन एवं पर्यावरण मंत्री भारत सरकार द्वारा, धन्यवाद का पत्र 1993.
4ण श्री सी. समरपुंशवन, प्रबंध निदेशक बोकारो स्टील प्लांट द्वारा हार्दिक बधाई।
5ण के.सी. खन्ना, प्रबंध निदेशक बोकारो स्टील प्लांट द्वारा सराहना पत्र, वर्ष 1976 जनवरी।
6ण राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सफल होने पर तपन चौधरी प्रोजेक्ट को–ऑर्डिनेटर द्वारा सराहना पत्र, वर्ष 04.05. 1993.
7ण साथ ही पुलिस अधीक्षक, धनबाद– पंकज कुमार दराद, अजय कुमार सिंह द्वारा सराहना।
8ण उपायुक्त–धनबाद– सुनील कुमार वर्णवाल, नितीन कुलकर्णी, डॉ. बीला राजेश, इन सभी के द्वारा अपने कार्यकाल में महतो को सम्मानित एवं सराहना पत्र प्रदान किया।
9ण खोरठा शब्द–कोष लिखने पर हिन्दुस्तान द्वारा 24.02.2002, को सराहना।
10ण टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा– ग्रिटिंग्स लिखने, व खोरठा शब्दकोष के लिए सराहना (11.01.2009)
11ण मुलायम सिह यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी पार्टी द्वारा 31 जनवरी, 2015 को सराहना पत्र।
12ण अमेरिका से भाषा प्रेमी श्री चन्द्रकान्त मेहता द्वारा रचनाओं से प्रभावित होकर सराहना पत्र।

निष्कर्ष :

लोक साहित्य में श्याम सुन्दर महतो की काफी रचनाएँ है– जिनमें प्रमुख है– तोञं आर हाम (खोरठा काव्य), खोरठा लोक गीत (लोक साहित्य), टहलु दादाक गप (लोक साहित्य), खोरठा लोक गीत संग्रह (लोक साहित्य), मुक्तिक डहर (लोक साहित्य), चेडराक मुंडे बले (लोक साहित्य), साथ खोरठा भाषा साहित्य के विकास में श्याम सुन्दर महतो भी का विशिष्ट योगदान रहा है। उनकी रचनाओं से उनकी रचनाओं की विशिष्टता को समझा जा सकता है। साथ ही इनकी रचनाओं में मिट्टी (मातृभूमि), जिन्दगी के दुःख–तकलीफ, शहीदों की गाथाओं, अन्याय के विरूद्ध लड़ने की गाथाओं की आभार है।

संदर्भ सूची :

उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड, जीरो रोड इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ सं.22
मिश्र, डॉ. दुर्गाशंकर, साहित्यिक निबंध, संशोधनकर्त्ता, चतुर्वेदी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन केन्द्र रेलवे क्रामसिंग, सीतापुर रोड़, लखनऊ, पृ. सं. 411
उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड, जीरो रोड इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ सं.21
प्रमाणिक, शिवनाथ, खारेठा लोक साहित्य, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो इस्पात नगर, 2004, पृ. सं. 33
ओहदार, डॉ. बी0एन0, खोरठा भाषा एवं साहित्य, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़, 2007, पृ. सं.128
झा, डा.ए.के., खोरठा लोक कथा, झारखण्ड झरोखा, रातुरोड राँची, 2014, पृ.सं. 80–83
कुमारी, डॉ. अर्चना, खोरठा–शिष्ट साहित्य : क अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउन्डेशन, बरियातु राँची, 2015, पृष्ठ संख्या 46
वही, पृष्ठ संख्या 68
प्रमाणित, शिवनाथ, खोरठा लोक साहित्य खोरठा–संस्कृति परिषद् बोकारो इस्पात नगर, 2004, पृ. सं.89
पत्रिका, आदिवासी, झारखण्ड सरकार, के कुछ अंश अंक–अगस्त–2017.